

रसखान

( जन्म : सन् 1548 ई., निधन : सन् 1628 ई.)

रसखान का असली नाम सैयद इब्राहिम था। उसका जन्म दिल्ली के एक संपन्न परिवार में हुआ था। गोस्वामी विठ्ठलनाथजी से दीक्षा ग्रहण कर ब्रज में रहकर कृष्ण-भक्ति के पद लिखे। इस मुसलमान कवि की अनन्य कृष्ण-भक्ति सराहनीय है। इनकी कविता में कृष्ण की रूप-माधुरी, ब्रज-महिमा और राधा-कृष्ण की प्रेमलीलाओं का वर्णन हुआ है। उनकी भक्ति में प्रेम, श्रृंगार और सौंदर्य की त्रिवेणी बहती है। ब्रजभाषा का जैसा सरल-तरल, सरस-स्वच्छ और सजीव प्रयोग रसखान की कविता में मिलता है वैसा बहुत कम कवियों में प्राप्त होता है। रसखान जैसे भक्त कवियों को लक्ष्य करके ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था - 'इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए।'

'सुजान रसखान', 'प्रेमवाटिका' और 'रसखान रचनावली' उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

यहाँ रसखान के चार स्वैये लिए गये हैं। इनके स्वैयों में कृष्ण ही नहीं, कृष्ण-भूमि के प्रति अनन्य अनुरक्ति एवं समर्पण की भावना सजीव हुई है। कृष्ण की विविध लीलाओं का मनोहर वर्णन हुआ है। इन स्वैयों में कृष्ण का धेनु चराना, बेनु बजाना, प्रेमरंग में रंगना और भंगिमाओं के साथ माधुर्यपूर्ण चित्रण हुआ है। कृष्ण के सामीप्य के लिए कवि लकुटी लेकर ग्वालों संग फिरने की बात करते हैं। शिक्षक छात्रों को बतायें कि एक मुसलमान कवि होते हुए भी रसखान कृष्ण-भक्ति में लीन थे।

मानुष हौं तो वही 'रसखान', बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन ।  
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥  
पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यों कर छत्र पुरंदर कारन ।  
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥ 1 ॥

या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।  
आठहुँ सिद्धि, नवो निधि को सुख, नंद की धेनु चराय बिसारौं ॥  
'रसखान' कबौं इन आँखिन सो, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ।  
कोटिकहू कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥ 2 ॥

जा दिन तै वह नंद को छोहरो, या बन धेनु चराइ गयो है ।  
मोहिनी ताननि गोधन गाइकै, बेनु बजाइ रिझाइ गयो है ॥  
ताही घरी कछु टोना सो कै, 'रसखान' हिये में समाइ गयो है ।  
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥ 3 ॥

मोर-पखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरे पहिराँगी ।  
ओढ़ि पितांबर, लै लकुटी बन, गोधन ग्वारिन संग फिराँगी ॥  
भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो, तेरे कहे सब स्वाँग भराँगी ।  
ऐ मुरली मुरलीधर की, अधरान-धरी अधरा न धराँगी ॥ 4 ॥

### शब्दार्थ

मानुष मनुष्य बसौं रहना करूँ मँझारन मध्य, बीच पाहन पत्थर पुरन्दर इन्द्र कालिंदी-कूल यमुना नदी का किनारा लकुटी लाठी कामरिया कम्बल तिहूँ तीनों पुर लोक बिसरौं भूल जाई कोटिक करोड़ करील एक कँटीला वृक्ष कलधौत के धाम सोने के राजमहल

## स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :  
 (1) यमुना किनारे कदंब की डाल पर रसखान किस रूप में बसना चाहते हैं ?  
     (अ) पशु                         (ब) भगवान                         (क) पक्षी                         (ड) मनुष्य  
 (2) आठ सिद्धि और नव निधि का सुख प्राप्त होता है .....  
     (अ) नंद की धेनु चराने में ।                                                  (ब) यमुना किनारे स्नान करने में ।  
     (क) कदंब के वृक्ष पर बसने में ।                                                          (ड) मुरली बजाने में ।  
 (3) कलधौत के धाम का अर्थ होता है .....  
     (अ) काली यमुना नदी । (ब) सोने का राजमहल । (क) चाँदी का राजमहल । (ड) कृष्ण का राजमहल ।  
 (4) गोपी गले में ..... माला पहनना चाहती है ।  
     (अ) सोने की                                 (ब) हीरों की                                     (क) मोतियों की                             (ड) गुंजे की
2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :  
 (1) मनुष्य के रूप में रसखान कहाँ बसना चाहते हैं ?  
 (2) पशु के रूप में कवि कहाँ निवास करना चाहते हैं ?  
 (3) रसखान किस पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं ?  
 (4) पशुयोनि में जन्म मिलने पर कवि क्या करना चाहते हैं ?
3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :  
 (1) लकुटी लेकर रसखान क्या करना चाहते हैं ? क्यों ?  
 (2) श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए गोपी क्या-क्या करना चाहती है ?  
 (3) गोपी कृष्ण की मुरली को अपने अधरों पर क्यों नहीं रखना चाहती ?
4. निम्नलिखित प्रश्नों के चार-पाँच वाक्यों में उत्तर लिखिए :  
 (1) रसखान श्रीकृष्ण का सामीप्य किन रूपों में किस प्रकार चाहते हैं ?  
 (2) कवि श्रीकृष्ण से संबंधित किन वस्तुओं की अभिलाषा करता है । इनके लिए वह किन वस्तुओं को छोड़ने के लिए तैयार है ?  
 (3) कृष्ण की मुरली का ब्रज की स्त्रियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?  
 (4) कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शित करने के लिए रसखान क्या-क्या न्यौछावर करना चाहते हैं ?
5. उचित जोड़े बनाइए :  

‘अ’		‘ब’
मनुष्य		नंद की गाय
पशु		यमुना के किनारे कदंब की डाल
पक्षी		गोवर्धन पर्वत
पत्थर		गोकुल गाँव

**योग्यता-विस्तार कीजिए**

  - ‘इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिक हिन्दू वारिए’ कवि रसखान के संदर्भ में इस कथन की चर्चा कीजिए ।
  - ‘सवैये’ कंठस्थ करके उनका सस्वर पठन कीजिए ।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

  - रसखान के अन्य ‘सवैये’ छात्रों को बताइए ।
  - रसखान द्वारा रचित सौंदर्य के कुछ सवैयों की सूरदास के बाल-सौंदर्य एवं कृष्ण-भक्ति के पदों से तुलना करवाइए ।